

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 1, मानवता के सिद्धांत का महत्व

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं।
सत्र 1, मानवता के सिद्धांत का महत्व।

biblicalelearning.org के साथ मानवता और पाप के सिद्धांतों में आपका स्वागत है। आइए हम कुछ भी करने से पहले प्रार्थना करें।

दयालु पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद। हमें खुद को प्रकट करने के लिए धन्यवाद। अपने बेटे को हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए और अपनी आत्मा को हमारे दिलों में भेजने के लिए धन्यवाद ताकि हम उसे जान सकें, उससे प्यार कर सकें और उसकी सेवा कर सकें।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें आशीर्वाद दें। हमें प्रोत्साहित करें। हमें सिखाएँ।

हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं कि आप हमें अनंत मार्ग पर ले चलें।
आमीन। मैं रॉबर्ट पीटरसन हूँ।

मैंने 35 साल तक दो इंजील सेमिनारियों में पढ़ाया, जिनमें से एक सुधारवादी विचारधारा की थी, लेकिन निश्चित रूप से इंजीलवादी थी और दूसरी इंजीलवादी और सुधारवादी थी। मैं सेवानिवृत्त हो चुका हूँ। मैं सप्ताह में चार घंटे शोध, संपादन और लेखन में बिताता हूँ, जो मुझे बिगाड़ देता है।

मुझे वयस्क अध्ययन स्कूल में पढ़ाना बहुत पसंद है। मैं यूक्रेन में जूम के माध्यम से साल में कई बार RITE, रिफॉर्मर्ड इंटरनेशनल थियोलॉजिकल एजुकेशन नामक मंत्रालय के साथ पढ़ाता हूँ। मैं चाइल्ड इवेंजलिज्म फ़ेलोशिप के लिए एक धर्मशास्त्र सलाहकार भी हूँ, और मुझे ये व्याख्यान देना बहुत पसंद है।

इस बार, मानवता और पाप के सिद्धांतों का अवलोकन। मानवता के सिद्धांत या धर्मशास्त्रीय नृविज्ञान पर एक परिचय के बाद, यह एक तकनीकी शब्द है, हम मानव की उत्पत्ति के बारे में बात करेंगे, यह पुष्टि करते हुए कि हम ईश्वर की विशेष रचनाएँ हैं जो उनकी छवि में बनाई गई हैं, और ईश्वर की छवि मानवता के सिद्धांत के लिए हमारा बड़ा विषय है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, और हम इसे कई दृष्टिकोणों से देखेंगे ताकि यह समझने की कोशिश की जा सके कि इसका क्या मतलब है। फिर, संवैधानिक संरचना।

क्या मनुष्य इतने एकात्मक हैं जैसा कि आधुनिक विज्ञान हमें बताता है कि अविभाज्य आत्मा जैसी कोई चीज नहीं है, या क्या हम दो भाग हैं, जैसा कि चर्च ने ऐतिहासिक रूप से कहा है, एक अलग अमूर्त भाग के साथ, जिसे कभी आत्मा कहा जाता है, कभी आत्मा, आमतौर पर केवल व्यक्तिगत सर्वनामों का उपयोग बाइबिल में किया जाता है, या क्या हम तीन भाग हैं जहां आत्मा और आत्मा न केवल प्रतिष्ठित हैं बल्कि मानव के विभिन्न भागों या घटकों के रूप में ऑन्टोलॉजिकल रूप से

प्रतिष्ठित हैं? अपने निष्कर्षों का अनुमान लगाने के लिए, मैं अनिच्छा से कहूंगा कि हम दो भाग हैं, लेकिन जिस तरह से हमें बनाया गया है वह एकात्मक है। हम अब शरीर और आत्मा में एक हैं, और मृतकों के पुनरुत्थान के बाद, हम हमेशा के लिए एक हो जाएंगे। फिर हम पाप के सिद्धांत के बारे में बात करेंगे, भगवान की इच्छा से, बाइबिल के विवरण से शुरू करते

फिर, हम आज उपेक्षित विषय पर ध्यान देंगे, जो मूल पाप है। मूल पाप के सिद्धांत में, हम अपने पहले पिता, आदम, वास्तव में आदम और हव्वा के पतन के बारे में सीखते हैं, लेकिन मूल पाप का संबंध विशेष रूप से उत्पत्ति 3 में मानव जाति के विरुद्ध आदम के पाप को गिना जाना है। पुराने नियम में इसके परिणाम दिए गए हैं, लेकिन हमें नए नियम, विशेष रूप से रोमियों 5:12 से 19, या 21 तक प्रतीक्षा करनी होगी, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि आदम का पाप हम सभी को कैसे प्रभावित करता है। फिर, पतन के कुछ प्रभावों पर संक्षेप में चर्चा करें, विशेष रूप से इस बात पर कि क्या बचाए न गए मनुष्य स्वयं को बचाने के लिए परमेश्वर की ओर बढ़ने में सक्षम हैं या नहीं।

मानवता के सिद्धांत के लिए मैं मिलार्ड एरिक्सन के *ईसाई धर्मशास्त्र को श्रेय देना चाहता हूँ*, जिससे मुझे इस सिद्धांत के महत्व के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है और फिर कई छवियाँ हैं जो वास्तव में हमें तुलना करने में मदद करती हैं। हम उन्हें धर्मनिरपेक्ष या प्राकृतिक छवियाँ कह सकते हैं, बाइबिल के चित्रण के साथ जो कि पुरुष और महिला को उनके लिंग के साथ भगवान की छवि में बनाया गया है। एरिक्सन ने ईसाई धर्मशास्त्र पर अपनी पुस्तक लिखी, हे भगवान, ओह 40 साल पहले और उस समय उन्हें इंगील धर्मशास्त्रियों के डीन के रूप में पहचाना जा सकता था क्योंकि उससे पहले हमारे पास चार्ल्स हॉज का व्यवस्थित धर्मशास्त्र था, लुईस बर्कहॉफ का डच-अमेरिकी व्यवस्थित धर्मशास्त्र, हारमोन बोविक का महान डच व्यवस्थित धर्मशास्त्र शायद 15 साल पहले तक अंग्रेजी में अनुवादित नहीं हुआ था, इसलिए एरिक्सन दृश्य में आए और यह नया था, वह स्पष्ट थे, उनके पास प्रसिद्ध जर्मन धर्मशास्त्री वोल्फहार्ड पैननबर्ग के साथ पोस्ट-डॉक्टरल कार्य सहित अच्छी शिक्षा थी और एरिक्सन ने एक बहुत ही स्पष्ट, सहायक पुस्तक लिखी, जो उनके अपने धर्मशास्त्र का वर्णन करने के लिए पूरी तरह से इंगीलवादी थी, वह एक उदारवादी या चार-बिंदु वाले कैल्विनवादी होंगे, वह बैपटिस्ट हैं लेकिन हमेशा दूसरों के प्रति दयालु और निष्पक्ष, पूर्व-सहस्राब्दी लेकिन क्लेश के बाद के, करिश्माई नहीं लेकिन विरोधी भी नहीं, एक बहुत ही ठोस भाई, मैंने अपने अध्यापन के प्रथम 10 वर्षों में उनके व्यवस्थित धर्मशास्त्र का प्रयोग किया, उसके बाद मैं एक अधिक सुधारित और सुसमाचार-संबंधी स्कूल में चला गया, जहाँ मैंने अगले 25 वर्षों तक बर्कहॉफ का प्रयोग किया। मानवता के सिद्धांत का महत्व।

इसलिए, धर्मग्रंथ और ईसाई धर्म के सिद्धांत आपस में जुड़े हुए हैं। एक अर्थ में, हर सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत होता है जब वह चर्चा के अंतर्गत होता है, और यह ऐसा है जैसे कि बाइबल की मेरी पसंदीदा पुस्तक वह है जिस पर मैं अभी प्रार्थना कर रहा हूँ, और मैं दोनों नियमों और चमत्कारों पर चकित हूँ, मैं रुकूँगा, मैं नामों का उल्लेख करना शुरू नहीं करूँगा, लेकिन वाह, वैसे भी मामला उससे आगे जाता है, न केवल वह जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, वह सिद्धांत जिसका हम अभी अध्ययन कर रहे हैं, बहुत महत्वपूर्ण है बल्कि विभिन्न तरीकों से, अलग-अलग सिद्धांत बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं। शास्त्र का सिद्धांत, निश्चित रूप से, ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है; यह बाकी सभी के लिए हमारा सैद्धांतिक ढांचा है।

हम ईश्वर और मानवता और पाप और मसीह और मुक्ति और चर्च में पवित्र आत्मा और पवित्र शास्त्र से अंतिम धन्यवाद के सिद्धांत कहाँ से सीखते हैं। मैं सोला स्क्रिप्टुरा, केवल शास्त्र की सुधार समझ के लिए प्रतिबद्ध हूँ, जिसका अर्थ यह नहीं है कि तकनीकी रूप से बाइबल ही एकमात्र अधिकार है जिसका हम उपयोग करते हैं क्योंकि अगर हम इसके बारे में सोचते हैं, तो हम सभी तर्क का उपयोग करते हैं, मुझे उम्मीद है कि जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हम किसी तरह की परंपरा में होते हैं, परंपराविहीन होना खुद को अतीत की गलतियों को दोहराने के लिए असुरक्षित बनाना है, हालाँकि अत्यधिक पारंपरिक होने का खतरा है, मैं समझता हूँ, और हम सभी अनुभव की भी अपील करते हैं, अगर हम ईमानदार और समझदार हैं, तो सोला स्क्रिप्टुरा परंपरा, तर्क और अनुभव की अपील को खारिज नहीं करता है, लेकिन इसका मतलब है कि मेरी अपनी समझ में सोला स्क्रिप्टुरा का अभ्यास करना जानबूझकर और लगातार हमारी परंपराओं, तर्क, अनुभव और हमारे पास मौजूद अधिकार के किसी भी अन्य स्रोत से ऊपर भगवान के वचन को ऊँचा करना है। क्या मैं इसे पूरी तरह से करने का दावा करता हूँ? नहीं, लेकिन यह मेरा लक्ष्य है।

इसलिए, ज्ञानमीमांसा के उद्देश्यों के लिए शास्त्र का सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण है। यदि ईश्वर ने स्वयं को हमारे सामने प्रकट न किया होता और उस रहस्योद्घाटन को शास्त्र में सुरक्षित न रखा होता, तो हम अपनी ज़रूरत और उस ज़रूरत के लिए उनके समाधान के बारे में नहीं जान पाते। ईश्वर का सिद्धांत अस्तित्व के सिद्धांत के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि ईश्वर परम वास्तविकता, स्रोत और सभी चीज़ों का पालनहार है।

मैं इस बात पर खेद व्यक्त करता हूँ कि आज भी, यहाँ तक कि इंजील धर्मशास्त्र में भी, ईश्वर के प्रेम के सिद्धांत का दुरुपयोग करके बहुत बड़ी गलतियाँ की जा रही हैं। यह बार-बार सामने आता रहता है। लगभग कोई भी इंजीलवादी सार्वभौमिकता को नहीं मानता, यह दृष्टिकोण कि हर कोई बच गया है, लेकिन मैं आपको ऐसे लेख दिखा सकता हूँ जो कहते हैं, बेशक, अंत में हर कोई ईश्वर के प्रेम में शामिल हो जाएगा क्योंकि ईश्वर प्रेम है, या विनाशवाद के समर्थक भी इसी तरह तर्क देते हैं।

निश्चित रूप से, परमेश्वर लोगों को हमेशा के लिए नरक में पीड़ा नहीं देगा क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। इसलिए, जब लोग अपने पाप की कीमत, दंड चुका चुके होंगे, तो उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा, जिसे कुछ लोग सबसे बुरा संभव न्याय मानते हैं। नहीं, ऐसा नहीं है।

अगर यह सच होता तो वे अपने दुख से बाहर निकल जाते, और यह सच नहीं है। हालाँकि परमेश्वर प्रेम है, लेकिन हमें उस अद्भुत बाइबिल शिक्षा का उपयोग अन्य समान रूप से बाइबिल शिक्षाओं का विरोध करने के लिए नहीं करना चाहिए। या फिर इस बारे में क्या ख्याल है? मैं बस हैरान और दुखी हूँ कि मृत्यु के बाद का धर्मशास्त्र इंजील अनुयायियों को आकर्षित करना जारी रखता है।

मैं डलास सेमिनरी में पीएचडी भाई के लिए बाहरी पाठक हूँ, जो इस धारणा के साथ काम कर रहा है कि उन लोगों के साथ क्या होता है जिन्होंने नहीं सुना है, और मैंने 15 वर्षों से उस क्षेत्र में काम नहीं किया है, लेकिन उस समय में, अधिक से अधिक प्रामाणिक इंजीलवादी कह रहे हैं,

यह मुझे किसी भी शास्त्रीय साक्ष्य के विपरीत लगता है, मैं 1 पतरस 3 में मुश्किल छंद जानता हूँ और फिर 1 पतरस 4 इसे संदर्भित करता है, लेकिन हे भगवान। इब्रानियों 9, यह मनुष्यों के लिए एक बार मरने के लिए नियुक्त किया गया है, और उसके बाद न्याय आता है। यूहन्ना 8, दो बार यीशु कहते हैं, यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पाप में मर जाओगे।

अगर तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, जिसका वादा किया गया था, तो तुम अपने पापों में मर जाओगे। मृत्यु के बाद कोई संभावना नहीं है। यह एक झूठी उम्मीद है जो ईश्वर के प्रेम के नाम पर कायम है।

एक बार फिर, यह वास्तव में ईश्वर के प्रेम को बढ़ावा नहीं दे रहा है। और मैं रुकूंगा, लेकिन हाँ, ईश्वर प्रेम है, लेकिन 1 यूहन्ना द्वारा अध्याय 4 में दो बार कहे जाने से पहले ईश्वर प्रेम है, यह अध्याय 1 में सीधे तौर पर कहता है, ईश्वर प्रकाश है, जिसका अर्थ है कि वह पवित्र है। इसका शायद दोहरा अर्थ है और यह सत्य है, लेकिन निश्चित रूप से, संदर्भ में, कम से कम वह प्रकाश है।

उसमें बिलकुल भी अंधकार नहीं है। वह पूरी तरह से सच्चा है, लेकिन खास तौर पर वह पवित्र है और प्रतिद्वंद्विता, प्रतिद्वंद्विता को बर्दाश्त नहीं करेगा, और वह पाप को दंडित करेगा और करना चाहिए। मसीह का सिद्धांत हमारे उद्धार के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि उसके अवतार, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के बिना, कोई आधार नहीं होगा, और कोई उद्धार नहीं होगा।

एरिकसन हमें याद दिलाते हैं कि मोक्ष का सिद्धांत अस्तित्वगत रूप से सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे जीवन, हमारे अस्तित्व के वास्तविक परिवर्तन से संबंधित है। चर्च संबंधपरक रूप से सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि यह ईसाई समुदाय में विश्वासियों के साथ व्यवहार करता है। इतिहास में एस्कैटोलॉजी सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है, क्योंकि यह हमें हमारे शाश्वत भाग्य के बारे में बताता है।

मानवता का सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्यों है, इसके कई कारण हैं। यह सिद्धांत अन्य प्रमुख ईसाई सिद्धांतों से इसके संबंध के कारण महत्वपूर्ण है। चूंकि मनुष्य ईश्वर के सांसारिक प्राणियों में सर्वोच्च है, इसलिए मानवता का अध्ययन ईश्वर के कार्य के बारे में हमारी समझ को पूर्ण करता है, और स्वयं ईश्वर के अर्थ में, क्योंकि हम सृष्टिकर्ता के बारे में कुछ सीखते हैं, यह देखकर कि उसने क्या बनाया है।

बाद में, मैं न्यू टेस्टामेंट के सेवानिवृत्त प्रोफेसर रॉबर्ट सी. न्यूमैन द्वारा हमारे ईश्वर की छवि में रचनात्मक तरीके से और बाइबिल के तरीके से बनाए जाने के बारे में एक दिलचस्प विचार साझा करूंगा जो हमें उस बिंदु को देखने में मदद करेगा। बाइबिल में केवल मनुष्यों के बारे में कहा गया है कि उन्हें ईश्वर ने अपनी छवि और समानता में बनाया है, उत्पत्ति 1:26-27, जिसे हम बाद में विस्तार से देखेंगे। इस प्रकार, ईश्वर की प्रकृति का एक सीधा सुराग मनुष्यों के अध्ययन और उन भूमिकाओं से उभरना चाहिए जो हम निभाते हैं, जो ईश्वर द्वारा निर्धारित हैं, जो उनकी भूमिकाओं को प्रतिबिंबित करती हैं।

यहीं पर छवि-प्रतिबिंबित करने का विचार आता है। मानवता का सिद्धांत भी मसीह के व्यक्तित्व के बारे में हमारी समझ पर बहुत प्रकाश डालता है क्योंकि बाइबल सिखाती है कि त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति, शाश्वत पुत्र ने वास्तविक मानव स्वभाव धारण किया। इस तथ्य का अर्थ है कि मसीह के स्वभाव को समझने के लिए, मानवता के स्वभाव को समझना आवश्यक है।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम आवश्यक मानवता को ईश्वर के हाथ से प्राप्त अस्तित्वगत या अनुभवजन्य मानवता से अलग करें, जैसा कि हम अब वास्तविक अस्तित्व में पतन के बाद पाते हैं। यह धार्मिक पद्धति दोनों दिशाओं में काम करती है। यीशु के मानव स्वभाव का अध्ययन हमें इस बात की अधिक पूर्ण समझ देगा कि मानवता वास्तव में क्या होनी चाहिए क्योंकि यदि हम दर्पण में देखते हैं, तो दुर्भाग्य से, हमें मानवता के बारे में एक विकृत दृष्टिकोण मिलता है।

इसके अलावा, मानवता का सिद्धांत अन्य सिद्धांतों के अध्ययन का भी द्वार है, जिनके साथ संबंध इतना स्पष्ट नहीं है। यदि ईश्वर ने मनुष्यों को नहीं बनाया होता, तो संभवतः कोई अवतार नहीं होता, कोई प्रायश्चित्त नहीं होता, और पुनर्जन्म या औचित्य की कोई आवश्यकता नहीं होती। कोई चर्च नहीं होता।

इसका मतलब यह है कि मानवता के बारे में हमारी समझ को सही ढंग से तैयार करने के लिए असाधारण सावधानी बरतनी चाहिए। मनुष्य को जो समझा जाता है, वह हमारी धारणा को प्रभावित करेगा कि उनके लिए क्या किया जाना चाहिए, यह कैसे किया गया और उनका अंतिम भाग्य क्या है। इस प्रकार, इस सिद्धांत पर खर्च किया गया प्रयास सार्थक है, क्योंकि यहाँ, मुद्दे प्रत्यक्ष हैं और परिणामस्वरूप उन्हें खुले तौर पर और सचेत रूप से निपटाया जा सकता है।

इसलिए मानवता के सिद्धांत पर किया गया अतिरिक्त प्रयास विशेष रूप से सार्थक होगा। मानवता के सिद्धांत की एक असामान्य स्थिति है। यहाँ धर्मशास्त्र का छात्र भी इसका विषय है।

यह नृविज्ञान को धर्मशास्त्र, ईश्वर के सिद्धांत और क्राइस्टोलॉजी जैसे सिद्धांतों से अलग करता है, हालांकि यह सोटेरियोलॉजी जैसे सिद्धांतों से अलग नहीं है, जो निश्चित रूप से मनुष्यों के उद्धार से संबंधित है। हमारा नृविज्ञान यह निर्धारित करेगा कि हम खुद को कैसे समझते हैं और परिणामस्वरूप हम धर्मशास्त्र कैसे करते हैं, या यहाँ तक कि धर्मशास्त्र क्या है, इस हद तक कि इसे एक मानवीय गतिविधि के रूप में माना जाता है, जो कि निश्चित रूप से है। मानवता का सिद्धांत एक ऐसा बिंदु है जहाँ बाइबिल का रहस्योद्घाटन और मानवीय सरोकार एक साथ आते हैं।

धर्मशास्त्र यहाँ एक ऐसी वस्तु का इलाज कर रहा है जिसे हर कोई, या कम से कम लगभग हर कोई, मानता है कि उसका अस्तित्व है। आधुनिक पश्चिमी लोगों को इस बारे में कोई निश्चितता नहीं हो सकती है कि क्या ईश्वर है, क्या वास्तव में नासरत के यीशु जैसा कोई व्यक्ति था, या क्या उसके द्वारा बताए गए चमत्कार वास्तव में हुए थे। हालाँकि, उनके पास अपनी वास्तविकता के बारे में बहुत कम या कोई सवाल नहीं है, क्योंकि यह एक अस्तित्वगत तथ्य है जिसके साथ वे दिन-प्रतिदिन जीते हैं।

और जब तक कि वे किसी तरह से पूर्वी विचारधारा से प्रभावित न हों, यह संभवतः एक ऐसा तथ्य है जो उनके दिमाग में सबसे ज़्यादा निश्चित है। इसका मतलब है कि मानवता का विषय संवाद के लिए एक शुरुआती बिंदु है। अगर कोई गैर-विश्वासी के साथ इस बारे में चर्चा शुरू करता है कि बाइबल क्या कहती है या ईश्वर कैसा है, तो श्रोता का ध्यान आकर्षित होने से पहले ही भटक सकता है।

आज बहुत से लोग ऐसी किसी भी चीज़ के बारे में संदेह करते हैं जो इंद्रिय अनुभव से परे होने का दावा करती है। इसके अलावा, आधुनिक मन अक्सर मानवतावाद की ओर जाता है, जो मनुष्य और मानवीय मानकों को मूल्य और चिंता का सर्वोच्च विषय बनाता है। यह अक्सर एक सत्ता-विरोधीवाद में प्रकट होता है जो एक ऐसे ईश्वर के विचार को अस्वीकार करता है जो किसी को क्या करना है यह बताने का अधिकार रखता है, या एक आधिकारिक पुस्तक जो विश्वास और व्यवहार को निर्धारित करती है।

लेकिन आधुनिक मनुष्य अपने बारे में चिंतित हैं, उनके साथ क्या हो रहा है, और वे कहाँ जा रहे हैं। वे मानवता की अपनी समझ के बारे में ज़्यादा नहीं सोचते; वे समय की आम राय से अपने मूल्यों को निष्क्रिय रूप से स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन वे अपने कल्याण और जीवन में स्थान के बारे में रुचि रखते हैं और चिंतित हैं। इस प्रकार, जबकि बातचीत मानवता के साथ समाप्त नहीं होगी, यह कभी-कभी शुरू करने के लिए एक उपयुक्त स्थान है।

चूँकि हर संस्कृति में मनुष्य अपने बारे में, अपनी समस्याओं के बारे में और व्यक्तिगत तथा सामूहिक आधार पर अपनी ज़रूरतों के बारे में जागरूक होते हैं, इसलिए मानवता के बारे में बहुत कुछ कहा और पूछा जाता है। इसलिए, यह गैर-विश्वासियों के साथ चर्चा शुरू करने के लिए एक उपयोगी स्थान है। लेकिन चर्चा यहीं समाप्त नहीं होगी, क्योंकि एक गैर-विश्वासी की आत्म-समझ द्वारा उठाए गए प्रश्न ऐसे उत्तरों की ओर ले जाएंगे जो चर्चा के आरंभिक बिंदु से कुछ दूर होंगे।

उदाहरण के लिए, उठाए गए प्रश्न ईश्वर के साथ मनुष्य के रिश्ते की व्याख्या की ओर ले जाएंगे, जिसके बदले में, ईश्वर की प्रकृति की व्याख्या की आवश्यकता होगी। इस प्रकार, हालांकि चर्चा अंततः बहुत दूर तक जा सकती है, लेकिन यह वहीं से शुरू होगी जहां व्यक्ति की रुचि है। इस प्रकार, मानवता का सिद्धांत एक ऐसा बिंदु है जहां कभी-कभी आधुनिक धर्मनिरपेक्ष उत्तर-व्यक्ति या उत्तर-आधुनिक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति के दिमाग में पैर जमाना संभव होता है।

यह कम से कम उन विषयों से शुरू होता है जो सड़क पर चलने वाले व्यक्ति के दिमाग में होते हैं। मानवता का सिद्धांत, तीसरा, हमारे समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि विभिन्न बौद्धिक विषयों द्वारा मानवता पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। मानव स्वभाव या मानव व्यवहार को अपने ध्यान का प्राथमिक विषय बनाने वाले विषयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

व्यवहार विज्ञान के पहले से अनदेखे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने वाले नए विभाग नियमित रूप से विश्वविद्यालयों में अस्तित्व में आ रहे हैं। नए अंतर-विषयक अध्ययन सामने आ रहे हैं। यहां तक कि बिजनेस स्कूल, जो पहले आर्थिक और संगठनात्मक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते थे,

अब मानवीय कारक पर अधिक ध्यान दे रहे हैं और पा रहे हैं कि यह अक्सर सबसे महत्वपूर्ण होता है।

मेडिकल स्कूल इस बात को लेकर अधिक जागरूक हो रहे हैं कि डॉक्टर लक्षणों या बीमारियों या शरीर का इलाज नहीं करते बल्कि इंसानों का इलाज करते हैं। तदनुसार, डॉक्टरों को चिकित्सक-रोगी संबंध के व्यक्तिगत आयामों के बारे में पता होना चाहिए। और, ज़ाहिर है, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नृविज्ञान और राजनीति विज्ञान जैसे पारंपरिक व्यवहार विज्ञान मानव प्राणियों की जांच करना जारी रखते हैं।

मानवीय समस्याओं में रुचि बढ़ी है। नैतिक मुद्दे चर्चाओं में हावी रहते हैं, खास तौर पर युवाओं के बीच, चाहे उनका प्राथमिक मुद्दा कुछ भी हो। 50 के दशक में नस्लीय संबंध, 60 के दशक में वियतनाम युद्ध, 70 के दशक में पर्यावरण, जो आज भी जारी है, 80 के दशक में परमाणु हथियारों की दौड़ और 90 के दशक में अपराध।

और अब, 21वीं सदी की पहली तिमाही में, मनुष्य की पहचान, कामुकता, इत्यादि के मामले हर जगह हैं। सवाल उठाए जाते हैं: हमें क्या करना चाहिए? क्या सही है? और कभी-कभी इसका उत्तर हठधर्मिता से दिया जाता है: हम कौन हैं? हठधर्मितापूर्ण कथन ऐसे प्रश्न हैं जो किसी व्यक्ति को ऐसे मार्ग पर ले जाते हैं जो संभवतः उस पारलौकिक ईश्वर के उत्तर की ओर ले जा सकता है जो नैतिक मानदंडों का आधार है। काश ऐसा होता।

यहाँ यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि राजनीतिक बहस, जो अक्सर काफी जोरदार होती है, उन मुद्दों से निपटती है जो मूल रूप से नैतिक होते हैं, हालाँकि कभी-कभी यह छिपा होता है। क्या भौतिक समृद्धि एक अच्छी शिक्षा से ज़्यादा महत्वपूर्ण है? क्या आर्थिक सुरक्षा को पसंद की स्वतंत्रता से ज़्यादा महत्व दिया जाना चाहिए? ये ऐसे मुद्दे हैं जो वास्तव में सवाल उठाते हैं, मानव स्वभाव क्या है? मनुष्य के लिए क्या अच्छा है? जबकि हमारा पिछला बिंदु, अविश्वासियों के साथ चर्चा के लिए एक शुरुआती बिंदु के रूप में मानवता से निपटना, मूल्यवान है। अब, हम समाज की सामूहिक आत्म-चिंता के संदर्भ में अधिक सोच रहे हैं, जो एक अधिक बौद्धिक मामला है।

मानवता पर ध्यान केंद्रित करने वाले अकादमिक विषयों की बढ़ती संख्या के कारण, ईसाई धर्मशास्त्र अन्य दृष्टिकोणों और पद्धतियों के साथ संवाद में प्रवेश करने के लिए एक उपयुक्त स्थिति में है। जिस तरह किसी व्यक्ति के साथ अत्यधिक व्यक्तिगत चर्चा में, अकादमिक संवाद में भी यह महत्वपूर्ण है कि हमें बाइबिल धर्मशास्त्र के दृष्टिकोण से मनुष्यों की पूरी और सटीक समझ हो, साथ ही साथ यह भी पता हो कि धर्मशास्त्र के अलावा अन्य दृष्टिकोणों से उन्हें कैसे देखा जाता है। हमें यह जानना चाहिए कि इन अन्य दृष्टिकोणों द्वारा मनुष्यों को कैसे देखा जाता है और ये दृष्टिकोण धर्मशास्त्र के साथ कैसे तुलना और विरोधाभास करते हैं।

मानवता का सिद्धांत इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान में मानव आत्म-समझ में संकट है। जब एरिक्सन ने इन शब्दों पर काम किया, तो उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि आज हम कहाँ होंगे और यौन पहचान को लेकर युवा लोगों में कितनी उलझन है। यह मेरे लिए चौकाने

वाला है, और यह बहुत दुखद है कि लोग बिना दिशा-निर्देश के भटक रहे हैं, वही दिशा-निर्देश जो ईसाई धर्मशास्त्र प्रदान कर सकता है।

इस सवाल में न केवल आम दिलचस्पी है, बल्कि इंसान क्या है? हाल ही में हुई कई घटनाओं के जवाब को लेकर भी भ्रम है, और घटनाक्रमों ने इस सवाल के पहले दिए गए कई जवाबों पर संदेह पैदा कर दिया है। एक घटनाक्रम यह है कि युवा लोगों का यह पता लगाने का संघर्ष कि वे कौन हैं। पहचान की तलाश हमेशा से ही सामान्य परिपक्वता का हिस्सा रही है, जीवन, मूल्यों और लक्ष्यों पर किसी के स्वतंत्र दृष्टिकोण को बनाने का।

हालाँकि, हाल ही में ऐसा लगता है कि इसने बड़े आयाम ले लिए हैं। एक बात यह है कि कई माता-पिता वास्तव में अपने बच्चों में मूल्यों का संचार नहीं करते हैं या उन मूल्यों की वकालत नहीं करते हैं जो वे स्वयं अपनी जीवनशैली में प्रकट नहीं करते हैं। हमारे कुछ मित्र जिन्हें हमने अपने बच्चों को संडे स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्होंने कहा, अरे नहीं, नहीं, नहीं, पति और पत्नी अलग-अलग धार्मिक पृष्ठभूमि से आते हैं, और हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे तटस्थ रहें और वयस्क होने पर खुद के लिए चुनाव करें।

और मेरी टिप्पणी, जितना मैं इसे दे सकता था, उतनी ही मधुरता से, किसी निर्णयात्मक भावना के साथ नहीं, यह है कि आप अपने बच्चों को अज्ञेयवादी बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। बच्चों के पालन-पोषण में नैतिक या धार्मिक तटस्थता जैसी कोई चीज नहीं है। या तो आपके पास प्रतिबद्धताएँ हैं, या नहीं हैं, और चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं, आप उन प्रतिबद्धताओं को अपनी संतानों तक पहुँचाएँगे।

मूल्यों के पारंपरिक स्रोत, चर्च, विश्वविद्यालय और राज्य, संदिग्ध हो गए हैं और कुछ मामलों में, पारंपरिक यहूदी-ईसाई मूल्यों के प्रति शत्रुतापूर्ण हो गए हैं। मैं कौन हूँ? जीवन क्या है? दुनिया कहाँ जा रही है? आत्म-समझ के संकट में योगदान देने वाला दूसरा विकास ऐतिहासिक जड़ों का नुकसान है। कई मामलों में, इतिहास ज्ञान का एक खोया हुआ क्षेत्र बन गया है जिसे अव्यावहारिक या अप्रासंगिक माना जाता है।

एरिक्सन द्वारा लिखे जाने के बाद से ही इस पर हमला किया गया है और जानबूझकर इसे खारिज किया गया है। और यह बहुत दुखद बात है। हमें इतिहास की नकल करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन इतिहास के बारे में कुछ जानकारी होने से हम निश्चित रूप से समझ सकते हैं कि हम कौन हैं और दुनिया और समय में हमारा क्या स्थान है।

लोग और यहाँ तक कि पूरे राष्ट्र भी यह भूल रहे हैं कि वे कौन हैं। परम्पराएँ एक तरफ़ रख दी गई हैं, लेकिन परम्पराएँ हमें इस बारे में बहुत कुछ सिखा सकती हैं कि हम कौन हैं। अंतिम प्रश्न यह है कि मानव जाति कहाँ से आई? ईसाई धर्म उस प्रश्न का उत्तर देता है और इस प्रकार हमें पहचान का एक निश्चित एहसास देता है।

हम ईश्वर की रचनाएँ हैं। हम अपने निर्माता के विरुद्ध खड़े हैं। हम उसके प्रति जवाबदेह हैं।

हम उसमें अपना सर्वोच्च अर्थ पाते हैं। हम उसकी छवि और समानता में बनाए गए हैं, और उसने हमें शुरू से ही अपने साथ संगति के लिए बनाया है। संपूर्ण मानव जाति अपनी शुरुआत और अपने निरंतर अस्तित्व के लिए परमेश्वर की इच्छा और कार्य का ऋणी है, जिसे प्रेम के कारण बनाया गया था।

मानव आत्म-समझ में संकट की ओर ले जाने वाला अंतिम विकास राष्ट्रीय जीवन में दर्दनाक घटनाओं से संबंधित है। हमारा देश या हमारी दुनिया क्या कर रही है? राजनीतिक हत्याएं, आतंकवाद, युद्ध, और हर हफ्ते, संयुक्त राज्य अमेरिका के एक स्कूल में एक और गोलीबारी होती है। ये वाकई बहुत दुखद बातें हैं।

मानव जाति में विरोधाभास बहुत गहरा और गहन है। एक ओर, हम अंतरिक्ष यात्रा और संचार, सूचना प्रसंस्करण और चिकित्सा में बड़ी छलांग सहित अविश्वसनीय उपलब्धियों के लिए सक्षम हैं, लेकिन हम खुद को नियंत्रित करने में असमर्थ हैं। नैतिक रूप से तटस्थ प्रौद्योगिकी का उपयोग सकारात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, लेकिन बुरे उद्देश्यों के लिए भी।

अपराध बढ़ता है, साथ ही वर्ग और नस्लीय तनाव और संघर्ष भी बढ़ता है। एक ओर, मनुष्य को लगता है कि वे लगभग देवता हैं जो सितारों तक पहुँच रहे हैं। दूसरी ओर, वे शैतान लगते हैं जो क्रूरता करने में सक्षम हैं जो पशु साम्राज्य में नहीं पाई जाती है।

मनुष्य की आत्म-समझ वास्तव में संकट के बिंदु पर है, जिसके लिए गहन जांच और सावधानीपूर्वक चिंतन की आवश्यकता है। पांचवां, यह सिद्धांत इस बात को भी प्रभावित करता है कि हम दूसरों की सेवा कैसे करते हैं। मनुष्यों और उनके भाग्य के बारे में हमारी धारणा इस बात को बहुत प्रभावित करेगी कि हम उनके साथ कैसे व्यवहार करते हैं और हम उनके लिए क्या करना चाहते हैं।

अगर हम मनुष्यों को मुख्य रूप से भौतिक प्राणी मानते हैं, तो सबसे महत्वपूर्ण विचार, और शायद वस्तुतः एकमात्र, सबसे प्रभावी तरीके से शारीरिक आवेगों की संतुष्टि होगी। अगर हम उन्हें मुख्य रूप से तर्कसंगत प्राणी मानते हैं, तो हमारा मंत्रालय मुख्य रूप से उनकी बुद्धि को अपील करेगा और कार्यों और विचारों के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किए गए तर्क और व्याख्याएँ और तर्कसंगत औचित्य प्रस्तुत करेगा। हमारा मूल आधार यह होगा कि जिन लोगों के साथ हम व्यवहार करते हैं, उनके लिए वांछनीय कार्य प्राप्त करने का तरीका उन्हें यह समझाना है कि यह अनुसरण करने का सबसे अच्छा तरीका है।

और हमने कितनी बार राजनेताओं को यह कहते सुना है कि शिक्षा ही वह चीज़ है जो हमें करने की ज़रूरत है? यह सच है, लेकिन यह अपर्याप्त है। हमें वास्तव में सुसमाचार और ऐसे लोगों के पुनरुत्थान की ज़रूरत है जो प्रभु को जानते और उनसे प्रेम करते हैं, जो शिक्षा और अपने साथी मनुष्यों से प्रेम करने के लिए खुद को समर्पित करेंगे और इसी तरह। अगर हम मनुष्यों को मुख्य रूप से भावनात्मक प्राणी के रूप में देखते हैं, तो उनसे हमारी अपील मूल रूप से भावनात्मक विचारों के संदर्भ में होगी।

यदि हम उन्हें अनिवार्य रूप से यौन प्राणी के रूप में देखते हैं, तो यह सुनिश्चित करना कि उन्होंने संतोषजनक यौन समायोजन प्राप्त कर लिया है, हमारे मंत्रालयों में प्राथमिकता लेगी। हम जिस लक्ष्य का पीछा करते हैं और जिस तरह से हम उन्हें प्राप्त करना चाहते हैं, दोनों के संदर्भ में, मनुष्यों की हमारी अवधारणा उनके साथ और उनके लिए हमारे काम के लिए महत्वपूर्ण है। मानवता की छवियाँ।

उपर्युक्त विचारों से हमें यह विश्वास हो जाना चाहिए कि मानवता का सिद्धांत हमारे लिए अध्ययन करने और गैर-ईसाई दुनिया के साथ हमारे संवाद में उपयोग करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। समकालीन संस्कृति द्वारा पूछे जा रहे प्रश्नों की पहचान करने के लिए, हालांकि, हमें मानवता की कुछ अधिक प्रचलित वर्तमान अवधारणाओं पर अधिक बारीकी से विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि बहुत से अलग-अलग विषय मानव प्रकृति से निपटते हैं। कई अलग-अलग छवियाँ हैं।

मनुष्य मशीन है। मनुष्य जानवर है। मैं वापस आकर इन पर विस्तार से काम करूंगा।

मनुष्य यौन प्राणी है। अरे, आज का दिन तो कमाल का है। आश्चर्यजनक रूप से धुंधला, विकृत और भ्रमित।

मनुष्य आर्थिक इमारतें हैं और अपनी आत्मा को कंपनी को बेचने वाले प्राणी हैं। अस्तित्ववाद मनुष्य को ब्रह्मांड के मोहरे के रूप में देखता है जिसका कोई अर्थ नहीं है। स्वतंत्र प्राणी मनुष्य को देखने का एक और तरीका है, जो अक्सर राजनीतिक और सामाजिक विचारों में स्पष्ट होता है।

सामाजिक प्राणी एक और विकल्प है। एक व्यक्ति को रिश्तों के एक समूह के रूप में देखा जाता है जिसमें वह शामिल होता है। मानवता के बारे में ईसाई दृष्टिकोण, निश्चित रूप से, इन सभी को छूता है, लेकिन उनमें से किसी एक के साथ पहचाना या बराबर नहीं किया जाना चाहिए।

मानवता की छवियाँ। क्यों न हम इसे अगली बार उठाएँ? अगली बार, हम ऐसा करेंगे। मानवता के सिद्धांत के महत्व के बारे में सोचने के बाद, हम अपने अगले व्याख्यान में मनुष्यों की इन छवियों के माध्यम से मिलकर काम करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिया गया शिक्षण है। सत्र 1, मानवता के सिद्धांत का महत्व।